अकविताक संदर्भ मे

यदि कोनो युगक उपलब्धि कें ओकर श्रेष्ठताक कसौटी बुझल जाय तँ ई बात ओहि युगक संग लागू हैतैक जकर विकासक गति अवरुद्ध भ' गेल हो अथवा जकर विकास प्रतिगामी हो। एहि दृष्टि सँ मैथिली साहित्यक दीर्घ-कालीन इतिहास मे आन भाषाक साहित्यक अपेक्षा काव्यान्दोलन बहुत कम भेल अछि। दुर्भाग्यक विषय जे एखनो धरि विद्यापतियेक भाषा-शैली हमरा लेल आदर्श बनल अछि। एखनो धरि श्रेष्ठताक कसौटी हमरा लेल विद्यापतिये छथि एवं सम्पूर्ण मैथिली भाषा तथा साहित्य कें लोक मात्र विद्यापतियेक नाम सँ जानैत अछि। विद्यापतिक साहित्य आ व्यापक महत्ता कें हम ऐतिहासिक परि-प्रेक्ष्य मे राखि शोध अथवा अध्ययनक विषय बनावी से तँ नीक, मुदा हुनका यदि हम विशाल वटवृक्षक छाया जकाँ अपना चेतना पर पसरल रहै देलियनि तँ जेना हुनका बाद सैकड़ो वर्ष धरि मैथिली साहित्य नीक जकाँ नहि पनपि सकल आ हमर वैभव धीरे-धीरे लुप्त होमय लागल, तहिना सैकड़ो वर्ष हम आओर अनु-र्वरे बनल रहब। मध्ययुगीन परिस्थिति आ विद्यापतिक परिवेशक कोनो सामंजस्य आजुक युगक संग नहि छैक। ई सत्य जे सैकड़ो वर्ष सें ओहि तरहक प्रतिभा मैथिली में नहि उत्पन्न भेल, मुदा इहो सत्य जे विश्वसाहित्यक रंगमंच पर मात्र विद्यापतियेक नाम भजला सँ हम अपन सम्मान नहि बढ़ा सकैत छी। बाबा भरोसे फौदारी लड़वाक युग समाप्त भ' गेल, समस्या अछि आब अपना मे शक्ति संग्रह करबाक।

हमर कहबाक ई अभिप्राय नहि जे मैथिली काव्यक सुदीर्घ परम्परा मे विद्यापतिक बाद सशक्त कवि नहि भेला । महाकवि चन्दा झा, गोविन्द दास, मनबोध, हर्षनाथ, ईशनाथ झा, बदरीनाथ झा आदिक द्वारा मैथिली काव्य-परम्परा परिपुष्ट होइत भुवन, सीताराम झा, मधुप, सुमन, अमर, किरण, मोहन, हरिमोहन झा, आरसी प्रसाद सिंह, दिवाकर शास्त्री, गोपेश, दीपक, गौरीकान्त झा चौधरी 'कान्त' आदिक द्वारा विकसित तँ भेल मुदा एहि सभ कवि मे पछिला काव्य-प्रवृत्तिक पुनरावृत्तिक आग्रह विशेष छलनि । पुनरावृत्तिक अर्थ जे कविलोकनि ओहि सभ दोष कें अपनौलनि जे ह्रासोन्मुख कविता केर लक्षण होइत छैक—पौराणिक पात्र आ पुराण काव्यक शिल्प कें सुग्गा जकाँ रटैत रहलाह । काव्यक पूर्ववर्त्ती मान्यता कें अस्वीकृत कए नूतन दृष्टिकोण आ नवीन समस्याक वस्तुपरक विश्लेषण कवि सभक द्वारा बहुत कम भेल । सांस्कृतिक चेतना जगाबै मे सुमनजी आ प्रगतिशील विचारक नवीनता आनै मे यात्रीजी क प्रयास स्तुत्य छैनि मुदा वर्तमान विश्वक प्रवंचनापूर्ण राजनीति, परम्परागत मानवीय मूल्यक विघटन, तथाकथित नव मानवतावादी सिद्धान्तक स्थापना, सामाजिक चेतनाकेर नवीन आयामक उद्घाटन आ युगक नवीन जटिलता कें आत्मसात कए ओ लोकनिक' कोनो नवीन मानदण्डक स्थापना नहि क' सकलाह ।

मैथिलीक गीति-परम्परा अत्यन्त समृद्ध अछि । पहिलुक गीति-परम्पराकेरक दोष सभक परिहार कयलनि नवगीतकार मायानन्द मिश्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, केदारनाथ लाभ, सोमदेव, किसुन, धीरेन्द्र । हिनका लोकनिक गीत मे अभिव्यंजनारूढ़िकेर दादुर-रट नहि, नव-बोधक टटकापन भेटल ।

प्रो० मायानन्द मिश्र जाहि १९५० ई० सँ १९६० ई० धरिक काल कें यथार्थवाद कहने छथि, ओ आओर किछु नहि स्वातंत्र्योत्तर सजगता, नवजागरण तथा गाँधीवाद सँ प्रेरित प्रगतिवादक समाजोन्मुख अन्तर्यात्रा छलै जकरा स्वर देब' मे मुख्य छलाह सुमन, मधुप, किरण, अमर तथा यात्री । एहि समाजोन्मुख अन्तर्यात्रा पर पाश्चात्य नव मानववाद आ बुद्धिवादक झिलमिल छाया तँ छल मुदा परम्पराक प्रति पूर्ण मोहभंग नहि भेलाक कारण ओ अपन तथाकथित आधुनिकता मे संस्कार आन भाषा जकाँ वैज्ञानिक नवता कें ग्रहण करबा सँ वंचित रहि गेल । संस्कारक पूर्वाग्रहे छल जे हिन्दीक नागार्जुन कें प्रगतिशील आन्दोलन सँ सम्बद्ध एक महान् जनकवि होइतो मैथिल यात्रीक प्रगतिवाद

मार्क्सवादी कम्बल ओढ़ने एकटा कर्मकाण्डी पण्डित बुझना जाइछ जकर आंचलिक संकीर्णता भारतीयता मे परिणत भ' गलैक मुदा ओ कोनो क्रान्तिक जन्म नहि द' सकल । 'चित्रा' सँ मैथिली मे एक नवीन काव्य-परम्पराक आरम्भ होइत अछि । यात्रीजी युगानुकूल भाव, भाषा, आ शिल्पक अन्वेषण कयलनि तथा मिथिलाकेर माटि-पानि आ ओकर परिवेश कें नव ढंग सँ स्वर देलनि मुदा तीक्ष्ण संघर्ष एवं विरोधी प्रतिक्रिया सँ जाहि आत्मसंघर्षक जन्म भेल ओकरा ओ नहि पकड़ि सकलाह । मानव मनकेर विकृति हुनक उदारपंथी दृष्टि सँ खोखल रहि गेल ।

१९५९-६० सँ मैथिलीओ मे प्रयोग होमय लागल । एहि प्रयोगक पीठिका मे कोनो सुविचारित आन्दोलन नहि छलैक तें एकरा हिन्दीक प्रयोगवाद जकाँ महत्त्व नहि भेटलैक । अपना युगक सबसँ सशक्त आ अभिव्यंजनावादी कविक द्वारा एकरा एकटा सर्वोदयी नाम भेटलैक—"समकालीन कविता ।"

प्रयोगवाद आन भाषाक अपेक्षा मैथिली मे बहुत देरी सँ आयल मुदा आयल अवश्ये । संस्कार तथा वर्जनाकेर केहनो जबर्दस्त देबाल कियैक नहि बनाओल जाय मुदा युगक नवता-आग्रही विचार ओकर अतिक्रमण अवश्ये करैत छैक । मैथिली मे एहि आक्रामक विचार कें आनै वाला कवि छथि श्री राजकमल चौधरी, मायानन्द मिश्र, धूमकेतु, सोमदेव,"किसुन' हरिनारायण मिश्र, मधुकर गंगाधर, वीरेन्द्र मल्लिक, रामदेव, इलाराती सिंह आ एहि पंक्तिक लेखक । १९५८ मे राजकमल चौधरीक 'स्वरगन्धा' प्रकाशित भेलाक बाद मैथिली नव कविता कें एक नवीन मोड़ भेटल । सम्भावित नवकविताकेर केहन स्वर होइतैक (जे ओहि समयमे स्पष्ट नहि रहै) एकर स्पष्ट संकेत 'स्वरगन्धा' छल । संस्कारमुक्त, अनुभव-सम्पन्न राजकमल स्वरगन्धाकेर अनेक कविता मे समाजोन्मुख यथार्थवाद, आन्तरिक यौन संघर्ष, बाहरी वर्ग-संघर्ष एवं व्यक्ति-विद्रोहक 'अहं', वस्तुगत चेतना एवं विज्ञान-सम्मत आधुनिकताकेर लक्षण प्रकट भेल । कविक विकास-यात्राकेर 'स्वरगन्धा' प्रारम्भ छलै । राजकमल चौधरीकेर परवर्ती कविता प्रयोगक द्वारि खोललक, आ संगे सोमदेव, धूमकेतु, किसुन, मायानन्द आदि एहि प्रयोगशीलता कें आगाँ बढाब मे लागि गेला ।

ई स्वाभाविके जे साहित्य मे नवताक पहिल प्रस्फुटन होइत छैक नवीन शिल्पक रूप मे, नव अभिव्यक्तिक रूप मे । डा० जयकान्त मिश्रक शिकायत छलनि जे कवि लोकनि आबहुँ कमल, चन्द्र, सूर्य, शरद्, वसन्त एतबे धरि सीमित रखने छथि" ओकर निराकरण उपर्युक्त कविक प्रयोगशीलता मे भ' गेल ।

यद्यपि प्रगतियुगक महाकवि यात्री प्रयोगोक द्वारि पहिलहि खोलि देने रहथि आ नव कनिआकेर बाजब कें सेदल ढोलक टनटनैनाइ आ ओकर प्रकृति कें कवकब ओल कहि चुकल छलाह मुदा मधुकर गंगाधरक चुक्का जकाँ सोन्हायल मन आ ईर्ष्या जकाँ सिहरैत पुरिबा हुनका प्रयोग सँ कतहु नीवन आ श्रेष्ठ बुझना जाइछ—

"सूर्यक धाम पसेना
चिपचिप कनपट्टी
साँझक आंगुर सँ सरकल अछि कजरौटी
ई दु-मुंहा घरक देहरीं सकुचायल
बिना बजौने धमक सुनौलक पुरिबाइ
चुक्का जकां सोन्हायल
मनकेर कोर भरल
ईर्ष्या जकाँ सिहरि
कपइत अछि पुरिबाइ"।

"हिन्दीक ब्रह्ममुहूर्त" (राजेन्द्र माथुर) जकाँ मैथिलीयो मे पराती लिखल जाय लागल—

तुरत भेल अछि भोर
कारपोरेशनक नालीकेर जागि गेल दुर्गन्ध
अलबटाहि नबकी कनिआ सन मारै लागल हुलकी
खिड़कीपर पुरिवा संग भरि दिन करैत लट्टापट्टी
ओम्हर मोड़ पर लोहछल कुकूर लागल करय कटाउजि
शुरू कयलक एम्हर धोबिनियाँ गनि-गनि गारिक गीता
मौनक लंका मे व्याकुल छथि अभिलाषाकेर सीता
भोरे-भोरे कुमार मोनकेर काँपि उठल अछि ठोर
तुरत भेल अछि भोर।
× × ×
खिड़की पर घोड़नछत्ता सन लुधकल पहिल क रौद
तुरत भेल अछि भोर।"

एहि तरहें हँसराजक-चानक अभियान, निद्रा रूपेण संस्थिता, श्री जीवकान्त झाक 'रौद पछवा आ ग्रीष्म', धूमकेतुकेर द्वन्द्व 'प्रवंचना', ताराकान्तकेर अनुभव 'एकाकी' यन्त्रणा सँ दग्ध तथा साँझ क पोखरिक पद्म, रमानन्द रेणुकेर 'व्यक्ति', राम-

कृष्ण झा 'किसुन' क यात्राक, साथकता 'चौरचनक चान', नववर्षक चारि प्रतिक्रिया तथा हुनक आत्मनेपदक कविता, राजकमल चौधरीक वासन्ती परकीया विलास, तथा कोनो विस्मृताक प्रति हमर "कैहन अहांकें लागत" तथा "वरदान आ अभिशाप" शीर्षक कविता, सोमदेवक 'सूरजा डकैत" प्रयोगक नवीनता दिस हमर ध्यान आकृष्ट करैत अछि। आजुक नवकविता आब प्रयोगक उपर्युक्त अवस्था पार कए चुकल अछि। ओकर विशेषता के हम "समकालीन कविता" कहि नहि व्यक्त कए सकैत छी, कारण ओ जाहि संघर्ष आ संक्रान्ति कें जन्म द' रहल अछि ओकर पर्याय समकालीन शब्द नहि भ' सकैत अछि। वस्तुतः इयेह संघर्ष आ संक्रान्ति नव कविताक उत्स थिकै जकर प्रारम्भिक दर्शन होइत अछि राजकमल चौधरीक कविता में। नव कविताकेर एहि संक्रान्ति आ संघर्ष कें कनेक विस्तार सँ स्पष्ट कए रहल छी।

मैथिलीक नवकविता हिन्दी अथवा अंग्रेजीक नवकविता सँ सर्वथा भिन्न संदर्भ राखैत अछि। ई कोनो प्रतिक्रिया विशेषक उपज, विरोधक परिणाम अथवा विदेशी अनुकरण नहि थिक। ई वर्तमान जीवनक विद्रूपता, घुटन, उत्पीडन, असन्तोष, विक्षोभ, संत्रास एवं अभावक स्वस्थ चित्रण करै वाला सामाजिकता एवं गम्भीर जीवन-संस्पर्श सँ युक्त अपन विशिष्ट गुणक कारण परम्परा सँ कटल, रूढिग्रस्त चेतना सँ मुक्त, स्वातन्त्र्य-सजग, विकसनशील एवं वैचारिक संधर्षक रचना थिक। जाहि भाषाक साहित्य जतेक समर्थ एवं उन्नतिशील होइत छैक ओ ताही अनुपात मे आन्दोलन, वैचारिक संघर्ष, प्रयोग, संक्रान्ति, अन्तर्विरोध कें जन्म दैत अछि। विकसनशील साहित्य मे रचनाकार शीघ्र पुरान होइत छथि, कियेक तँ नवका पीढ़ी कोनो नवीन अन्वेषण, नव साहित्य, वैचारिक क्रांति एवं शिल्पगत नवीनता ल' कए सामने आबि जाइत अछि। पुरनक पीढ़ीक रचनाकार अपन पूर्वाग्रह, संस्कार अथवा रूढ़िप्रियताक कारण नव विचार-धारा सँ यदि अपना कें सम्पन्न करवा मे असमर्थ सिद्ध होइत छथि तथा हुनक विचार युग-परिवर्तनक संगेसंग यदि परिवर्त्तित नहि होइत अछि तँ निश्चितरूपेण ओ अपना पीढ़ीक ईमानदार रचनाकार नहि कहल जा सकैत छथि। नवीन अथवा पुरानक कोनो निरपेक्ष अस्तित्व नहि छैक। रचनाक्रम जखन मोड़ लैत छैक तँ प्रारम्भ मे नव रचनाक नवीनता दिस ध्यान आकृष्ट होइत छैक। विषय-वस्तु, भाव-भूमि, अन्तर्विचार आ शिल्पक दृष्टि सँ वर्गीकरणक काज बाद मे कैल जाइत छैक। तें नूतनता एवं पुरातनता कें परिभा-

षित करै काल एहि सापेक्षताक बड़ महत्त्व । नवक उदय भेला पर पुरान अपन गतानुगतिकता, रूढ़िद्धता एवं कुण्ठाग्रस्तताक कारण निस्तेज एवं ह्रासोन्मुख भ' जाइत छैक । प्रत्येक युग मे प्राणहीन तत्त्वक अस्तित्व विशेष दिन धरि नहि रहैत छैक तें जावन्त होएबाक लेल नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा एवं परिपक्व जीवनानुभूति कें अभिव्यक्त करबाक लेल वैज्ञानिक दृष्टिकोण रहनाइ परमावश्यक । कवि या कविताक मानदण्ड रचनात्मक गति होइत छैक आ रचनात्मक गतिक महत्त्व उपलब्धि सँ विशेष छैक, कियेक तँ गत्यात्मकतेक आधार पर साहित्यक जीवन्तताक मूल्यांकन कैल जा सकैत अछि ।

आइ जतेक लिखल जा रहल अछि, ओहि मे स्थायी महत्त्वक सामग्री कतेक छैक—ई भविष्य केर निर्णायक पर छोड़ि देल जाय । प्रश्न अछि एहि सृजन मे कतेक मौलिक अछि, आ कतेक अनुकृति । कविताक बाढ़ि आनें वला कवि मे अधिकांश कविता केर महत्त्व कें नहि बुझैत छथि । अधिकांश कवि आत्मप्रलापी छथि जे जीवन केर सभ क्षेत्र मे विफलता आ निराशा प्राप्त कए बैसल रहबाक अपेक्षा कविक पेशा अपना लेने छथि । अपन पराजय, कुण्ठा आ निराशा कें किछु विचित्र उपमान एवं रूपकक द्वारा या तँ प्राचीन शास्त्रीय पद्धति सँ अथवा छन्दहीन, लयहीन, तुकहीन, भावहीन पंक्ति मे पाठकगण केर सामने राखि कए आरोपित गम्भीरता केर विडम्बना ठाढ़ करैत छथि । कविता स्फीति केर अवस्था सँ गुजरि रहलि अछि । कविताकेर क्रमागत वृद्धिकोनो समानुपातिक प्रभाव नहि उत्पन्न क' रहल छैक । ई स्थिति कोनो भाषाक साहित्यक लेल अनाकांक्षित । एहि तरहक बाढ़ि प्रत्यैक साहित्य मे प्रयोगावस्था मे अबैत छैक, जहिना साहित्य संक्रान्तिकालीन आवर्त्त सँ मुक्त होइत अछि, ओकर विकास अपेक्षाकृत वेशी त्वरित भ' जाइत छैक,ओकर स्थिति आश्विनक जल जकाँ स्वच्छ, स्थिर आ निर्भ्रान्ति भ' जाइत छैक ।

नव कविकेर दृष्टि अत्यन्त तेज आ सार्वभौमिक होइत छैक । ओ अपना कें विशेष जिम्मेबार बुझैत छथि । हुनका रचना मे व्यक्तिगत एवं सामाजिक दायित्वक सन्तुलन बड़ व्यापक स्तर पर होइत अछि, ओ 'फार्मूला' मे विश्वास नहि रखैत छथि कियेक तँ ओ जाहि व्यस्त तथा जटिलजीवन कें जीवैत छथि ओकरे जीवित क्षण आ जीवित वस्तु कें बिना कोनो विशद आयोजन कयने अभिव्यक्त करैत छथि ।

जावन आ सेक्स दुनूक प्रति पहिला दृष्टिकोण आइ अर्थहीन भ' गेल छैक । सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था आइ छिन्न-भिन्न भ' गेल अछि । एक दिस शहरी

जीवन केर सुविधा आ सम्पर्कक प्रति लोक कें आकर्षण होइत छैक तँ दोसर दिस ओहिठामक विसंगति, विद्रूपता आ आडम्बरपूर्ण जीवनक रिक्तताक प्रति आक्रोशो उत्पन्न होइत छैक । ग्राम्य जीवन आइ विशेष अभावग्रस्त, बेडौल एवं अस्त-व्यस्त भ' गेल अछि । प्रत्येक व्यक्ति आन्तरिक हाहाकार तथा बौद्धिक दारिद्रयक स्थिति मे अपना कें पबैत अछि। कियेक तँ वैज्ञानिक सभ्यता मे विकसित होइत नगर-जीवन ओकरा मे आत्महीनता उत्पन्न करैत छैक । तें आइ सर्वाधिक महत्वक विषय ई जे प्रत्येक नवलेखक एहि विसंगति आ समस्या कें सही सन्दर्भ मे चीन्है तथा ओकर पूर्वाग्रहरहित सहज अभिव्यक्ति करै । अतीत सँ कटल आधुनिक मानवक लेल परम्परा-विच्छिन्न मूल्य विशेष उपयोगी होइ-तैक । सांस्कृतिक धरोहरि आ अतीतक वैभवक प्रति वेशी व्यामोह राखने वर्त्तमानेक उचित तरहें न्याय नहि कैल जा सकैत अछि तँ भविष्यक कथे कोन । सभ पुरान वस्तुकेर यदि हम संग्रह करै लागी तँ नव वस्तुक लेल स्थान भेटनाइ कठिन भ' जैतैक । पुरान चिन्तन पद्धति सँ आजुक समस्याक समाधान हम नहि निकालि सकैत छी ।

नव चिन्तन, नूतन शिल्प आ नवीन विचारधारा पहिने परम्परा कें ध्वस्त करैत अछि आ मैथिलीक आधुनिक कवि राजकमल चौधरी, मायानन्द मिश्र, रामकृष्ण झा 'किसुन कीर्तिनारायण मिश्र, सोमदेव, जीवकान्त आदि अतीतक प्रति मोह-भंग कए मैथिलीक संकीर्णता एवं अतिशय मर्यादावादी परम्परा कें ध्वस्त करवा मे लागि गेल छथि । ध्वंसक एहि प्रक्रिया मे सशक्त आ सप्राण वस्तु अपन अस्तित्वक रक्षा क सकत, मलवा किंवा निस्सारवस्तु कें निर्मोह भए फेंकि देवाक लेल ई कविलोकनि प्रस्तुत छथि । आधुनिक निर्माणक लेल पुरान स्थापत्य निर्मूल्य अछि । जीवन्त परम्परा केर ओतबे अंश स्वीकार कैल जा रहल अछि जे नव पीढ़ीकें स्वस्थ विकासक लेल प्रोत्साहित करैत छैक, मृत या गुमराह करै वाला परम्परा सर्वथा त्याज्य अछि ।

दिक्कालक दूरी आइ छोट भ' रहल अछि, विरोधी संस्कृति सभ एकसूत्र मे बन्हा रहल अछि । वेशभूषा, आहार-विहार एवं आचार-विचार मे समस्त भौगोलिक सीमाक अतिक्रमण भ' गेल अछि आ एक विचित्र समरसता देखवा मे अबैत अछि । मिश्रित संस्कृति क एहि युग मे प्रत्येक भाषा केर साहित्यक एक विशिष्ट स्वर होइत छैक जे ओकर अपन परिवेश तथा लोक-संस्कृति कें प्रतिध्वनित करैत छैक । तँ मैथिलीक नवीन काव्यान्दोलन अपन सामाजिक परिवेश, अपन संस्कृति आ अपन भिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिक कारण परम्परा सँ कटल

रहलो उत्तर एक स्वस्थ परम्पराक स्थापना क' रहलि अछि। नवकवि लोक-निक मानस पर पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान, दर्शन आ साहित्यक प्रभाव अवश्य पड़ल छनि मुदा ओ भारतीय संस्कृति केर अंग बनि वर्त्तमान नवीन परिवेश के समृद्ध करैत छैक। नवता आ नैरंतर्य मैथिली नवकविता केर मूल स्वर छैक, तथापि काव्यतंत्र पर विदेशी अन्धानुकृति क कत्तहुँ दर्शन नहि होइत अछि। नवकविक सामने आइ दुतरफा संघर्ष अछि। पहिल तँ परम्परा आ पुरान मान्यता सँ सामना करवाक संघर्ष, दोसर अपन लेखन-धर्म केर निर्वाहक लेल रचनात्मक आत्म-संघर्ष। एक दिस जहाँ विघटित होइत मूल्यक सही पहि-चानक अपेक्षा छैक तँ दोसर दिस विविधता केर वृहत्तर सन्दर्भ कें बुझैत नवीन मूल्यक स्थापक आकर्षणक अन्वेषणो आवश्यक। ई दू टा बात मूल्य स्तरक भेदक दिस संकेत करैत अछि। कहवाक तात्पर्य जे परम्परानुमोदित तथ्यक पुन-र्मूल्यांकनक द्वारा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य आ रूढ़िग्रस्त चेतना सँ मुक्त स्वातंत्र्य सजग नवलेखन केर बुद्धिग्राह्य धरातलक प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोणक अपेक्षा अछि। नव क्षितिज एवं नव मूल्यक अन्वेषण आधुनिकता केर सब सँ पहिल शर्त्त। पूर्वाग्रह आ परम्परा केर अनपेक्षित व्यामोह कें पालन करैवला साहित्य-कार नव परिवेश एवं आधुनिक जीवन संदर्भ कें ठीक सँ नहि चीन्हि सकैत छथि। अतः प्रत्येक समसामयिक कें आधुनिक नहि कहल जा सकैत अछि। समसामयिकता एवं आधुनिकता एक-दोसरक पर्याय नहि। कोनो समसामयिक दू सौ वर्ष पहिलुक संस्कार सँ अपना कें युक्त राखि सकैत अछि, नवीनो परि-वेश मे पुरनका मान्यताक आग्रह राखि सकैत अछि। नवीन युगक परिवर्त्तनक प्रति ओकर चेतना तटस्थ रहि सकैत छै। किन्तु, कोनो आधुनिक मात्र सम-सामयिके नहि होइत अछि वरन् ओ चेतन अनुभव कें प्रामाणिक एकता आ विशिष्ट जीवन तथ्य कें अर्थपूर्ण नवीन परिप्रेक्ष्य सेहो प्रदान करैत अछि। आधुनिक-बोध अतीत जीवनेतिहास आ' परिवर्त्तित जीवन-मूल्य दुनूक अध्ययन सँ सम्पुष्ट एक प्रबुद्ध चेतनवर्गक दिस संकेत करैत अछि। नवकवि क कर्त्तव्य एहि बोध कें जाग्रत कैनाइ थिक। तँ हेतु आइ प्रायोगिक चमत्कार उत्पन्न करवाक आवश्यकता नहि, आवश्यकता अछि सहजता कें लेखन धर्म मानि कें चेतना कें विकसनशील आधार प्रदान कैनाइ। एहि लेल चाही यथेष्ट साधना। असंस्कार आ असन्तोषक एहि समय मे समाजोन्मुख प्रवृत्तिक उन्नयन एवं आजुक जीवन केर वास्तविक रूपांकन सस्त भावुकता तथा बौद्धिक व्यायाम सँ नहि भ' सकैत अछि। कोनो सत्य आ नियम अपरिवर्तन-

शील अथवा स्थिर नहि होइत अछि। साहित्यकार अपना युगक सजग प्रहरी होइत छथि। युग परिवर्त्तनक संगेसंग साहित्यकार कें अपना बोध कें समृद्ध कर' पड़ैत छनि। युग आगा बढ़ि जाय आ साहित्यकारक बोध पछुआयल रहै तँ सर्जित साहित्य निश्चितरूपेण युगक प्रतिनिधित्व नहि क' सकैत अछि। जीवनानुभूति कें अभिव्यक्त करवाक लेल मैथिलीक नव कवि पछिला प्रयोगक पुनरावृत्ति नहि करैत छथि। पुरान उपमान तथा प्रतीक हुनका लेल निष्प्र-योजन भ' गेल छनि। नव विचारक संवाहक जर्जर-खियायल शब्द तथा प्राणहीन अर्थ नहि भ' सकैत अछि। सहजता आ कल्पनाक विस्तृति मैथिली कविता सँ लुप्त होमय लागल छल मुदा एहि विद्रोही पीढ़ीक द्वारा नवीन विषय वस्तु युगानुकूल भावजगत एवं काव्य, अभिव्यंजनाक नवीन शैलीक आविष्कार हिन्दी अथवा अन्य भाषाक समक्ष ई सिद्ध कए रहल अछि जे मैथिली मृत अथवा रूढिवादी भाषा नहि वरन् जीवन्त भाषा केर प्रत्येक लक्षण सँ युक्त अछि।

आधुनिकताक परिप्रेक्ष्य मे कोना कतिपय नवीन काव्य-तत्त्व नव कविता मे विक-सित भेल एकरा स्पष्ट करवाक लेल हम एक गोट कवित्ता प्रस्तुत करैत छी। 'खण्डित समन्वय' शीर्षक कविता मे श्री रामकृष्ण झा 'किसुन' लिखैत छथि............

फरफराइत बिहाड़ि
आ शून्य संकुल हम
वृत्तहीन
केन्द्रच्युत
एक रिदम-एक 'सम'
सीमन्तिनी रूपसी सँ
की ककरो होइत छैक
आकर्षण कम ?
मिझा गेल स्मृति केर
दयनीय मुद्रा
समर्पणक पूर्वहि
भखरि गेल रंग
कोन अपर्णाक भेल तपोभंग ?
ढेप फेकला पर पोखरिक पानि मे

होइत छैक तरंग
तरंगक विस्तार
विस्तार आ पसार
पसारक सीमा थिक निश्चय महार
मुदा हमने कयने छी
अहाँक सिनेह
आ सिनेहक सिङ्गार
जे फन काढने ठाढि छथि
अतीतक अनागता
नत मस्तक जकरा लग
कालक भुजंग
आतुर प्रतीक्षाक उद्धत अनंग
से थिक द्रौपदी
अ-संख्यक संग
बहुत ठरल होइत छैक
ओकरा मोनक आहार
जकरा केवल मरबाक छैक
मरबाक अतिरिक्त आर
किछु नहि करबाक छैक ।

एहि कविता मे परम्परागत मूल्य, स्थापित मान्यता आ काव्यरूढि केर भंजन "वृत्तहीन केन्द्रच्युत आ शून्य संकुल" मानव केर सूक्ष्म चित्रण द्वारा होइत अछि । सिनेह, प्रेम, आस्थासभकें जीवनक क्रूर विसंगति नष्ट कए चुकल छैक । तें सीमन्तिनी रुपसी कँ प्रति आकर्षण उत्पन्न होमय सँ पहिनो अनुरागक रंग भखरि जाइत अछि । स्थिति केर क्रूरता कें स्वीकार कए बोधक नवीन कोण पौराणिक पात्र द्रौपदी कँ नव संदर्भ देलक अछि ।

आधुनिकता कें जखन बोध केर स्तर पर स्वीकार कैल जाइत छैक तँ नव आ पुरानक स्तर स्पष्ट भ' जाइत छैक । मैथिली मे एखनो रूढ़ि रक्षक तत्व प्रबल अछि । नैतिक मूल्यक शाश्वतता आ नियतिवादिता मे विश्वास राखै वला व्यक्ति कें नवबोध आ आधुनिकता सँ संस्कृति पर खतरा बुझि पड़त छनि । सांस्कृतिक ह्रास तँ व्यतीत लेखन सँ होइत छैक जे क्रान्ति आ परिवर्त्तन कें नहि स्वीकार कए यथास्थिति रहबाक लेल सचेष्ट रहैत अछि । नवलेखनक

आगामी अभियान व्यतीत लेखन केर विरोध करैत अछि आ स्वतन्त्र अस्तित्व मे विश्वास राखैत अछि । "कालध्वनि" मे सोमदेव द्वारा प्रस्तुत सहजतावादक भूमिका आओर किछु नहि, एहि स्वतंत्र अस्तित्व रक्षाक लेल रुढिरक्षक व्यतीतक समाजि पर रुढिभंजक नवता केर स्थापना करैत अछि ।

ऊपर हम जाहि 'कविता-स्फोति' केर चर्चा कैने छी ओकरो मूल समस्या इएह रुढि रक्षक व्यतीत छैक । नवीनता कें स्वीकार कए, अपन समय, अपन परिवेशक अनुकूल रचना लिखनिहार मैथिली मे बहुत कम छथि । सत्य त ई छैक जे नवकविता कें बुझनिहारो बहुत कम । मुदा नव-लेखन कें फूसि, संस्कारहीन, अश्लील एवं असामाजिक तथा नव कवि कें "अदृश्य रेशमक व्यापारी" कहनिहार केर सेहो कमी नहि । हमर "स्फोति" शीर्षक कविता एहि स्थिति कें स्पष्ट करैत अछि ।

हम अपन नियति, अपन स्थिति सँ परिचित छी । जाहि पराश्रित व्यवस्था मे हम जीवि रहल छी ओ अवमूल्यन, कुण्ठा, कापुरुषता, संत्रास तथा आक्रोशेक जन्म द' सकैत अछि । यदि हम ओकरा स्वीकार नहि करैत छी तँ हम अपन समयक, अपन परिवेशक संग, अपनक स्थितिक संग ईमानदार नहि छी । मूल्यक प्रश्न आइ निरर्थक बुझि पड़ैत अछि । जाहि समाज आ' प्रशासन मे असन्तोष, अराजकता एवं अव्यवस्था मानवक समस्त श्रद्धाभाव एवं आत्मीयता कें नष्ट क' देने हो ओतय आस्थाक बदला मे आक्रोश आ श्रद्धाक बदला मे घृणा उत्पन्न होइत छैक, आश्वासन प्रवंचना सन बुझना जाइत एवं आत्मीयता चापलूसी लगैत छैक । एहि सत्य कें पुरान पीढ़ीक कवि नहि बुझि सकैत छथि कियैक तँ हुनका चश्मा मे एखनो 'शाश्वतता' तथा 'नैतिकता' क शीशा लागल छनि । ओ मृत भ' गेला तकर हुनका ज्ञान नहि छनि । कविताकेर आँगन मे ओ किछु-ने-किछु राखबे करताह, भने ओ कूड़े-कर्कट कियैक नहि हो ।

नव कविता केर रूपाकार एखनो बनिये रहल अछि । निर्माणाधीन वस्तु केर सम्बन्ध मे कोनो बात अन्तिम रुप सँ नहि कहल जा सकैत अछि । स्वीकृत मान्यता आ मूल्यक विरोध करैत नव कविता निरन्तर नवीनता केर अन्वेषण क' रहल अछि । सोमदेवक सहजतावाद आ राजककल स्वप्न-कविता विकसित होइत हमर अकविता धरि पहुँचि गेल अछि । भविष्य मे सम्भावित कविताकेर कोन रूप सामने आएत से कहब कठिन । स्वप्न कविताकेर जे अतिक्रमण अकविता मे भेल अछि ओ रचनात्मक विकासक द्योतक थिक, कोनो विरोधक सूचक नहि । हम कोनो आचार-संहिता राखि कए नहि लिखैत छी—नव सँ

नव्यतर आ नव्यतर सँ नव्यतम हमरा प्रत्येक क्षण आकृष्ट करैत अछि। तैं अपनो सीमाक हरदम अतिक्रमण करै पड़ैत अछि। जेना 'चित्राक' सीमाक अतिक्रमण कए नव कविता 'स्वरगन्धा', 'कालध्वनि', 'आत्मनेपद', 'दिशान्तर' धरि पहुँचि एकटा नवीन मोड़ ल' लेलक, तहिना 'वासन्ती परकीया विलास' आ 'स्वप्नकविता' केर 'इमेज' तोड़ि कए नव कविता, 'खण्डित समन्वय', 'स्फीति' तथा अकविता केर बोध धरि आबि गेल अछि। संक्रान्ति एवं 'हॉरर' क अनुभूति, इतिहास-बोधक साक्षात्कार नवचेता कवि कें नैकट्य एवं वृहत्तर नैरंतर्यक दृष्टि सँ सम्पन्न क' रहल अछि। अकविता अस्वीकृत मार्ग कें अपनाकए नवमर्जनात्मक चेतनाक अन्वेषण क' रहलि अछि। 'विद्रोही अहम्'', 'महानगर,' ''आऽकथू'' आदि कविता मे आधुनिक संवेदनाक सूक्ष्म अभिव्यक्ति तीक्ष्ण व्यंग्य एवं विरोधाभासक अस्वीकृति द्वारा भेल अछि।

अनास्था, विश्वासहीनता एव परम्परा-द्रोह कें कवि अपन नियतिकेर रूप में स्वीकार कए कुण्ठित नहि होइत अछि अपितु ओहि अनुभति सँ रचना-प्रक्रियाक मार्ग कें प्रशस्त करैत अछि। अकविताक ई सीमान्तक अभियान स्वस्थ विकासक सूचक थिक। उधारक स्थापना सँ आक्रान्त करबाक कुचेष्टा तथाकथित नवचेतनावादी कवि जकाँ अकविता केर कवि नहि करैत छथि। परिस्थिति-जन्य बोधकेर आलोक मे वस्तुस्थिति फरिछा कें देखल जा सकैत अछि।

३६, मणिलाल चटर्जी लेन,
बोटेनिकल गार्डेन,
हावड़ा (प० बंगाल) —कीर्त्तिनारायण मिश्र

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया
संवत् २०२४

सीमान्त

विद्रोही अहम्

•

धर्म-प्राण आस्थावान पिताकेर
हम धर्मद्रोही, आस्थाहीन भ्रष्ट पुत्र
समस्त पैतृक संस्कार कें
कोनो विधर्मीक हाथ बन्हकी राखि
परम निश्चिन्ताक अनुभव क' रहल छी।
हमर पूर्वज अथवा हमर माता-पिताक लेल
हमर अस्तित्व आइ सभसँ बड़का संकट
बुझि पड़ैत छन्हि।
हमरा जन्मसँ पहिनेक सभ मनौती
सभ कबुला
सब पाबनि मे
हमरे संभवक कामना छल होइत
मुदा ओ सब आइ हुनका लेल
पश्चातापक कारण बनि गेल छन्हि
हमर सहज विद्रोह पहिने हिनके
सभसँ अछि
कियैक तँ
ममताक व्रण।
सहानुभूतिक पिउज
अपनत्वक दुर्गन्धि
हमरा जिनगीकें अभिशप्त बना देलक।
आइ हम स्वयं

अपन सम्पूर्ण अस्तित्वक शल्य-परीक्षा
क' रहल छी।
अपन सियाह रक्त मे
विश्वास, आस्था आ सौन्दर्यक
मिसियो भरि लालिमा नहि भेटैत अछि।

●●

स्फोति

●

स्फोति केर एहि युग मे
अवमूल्यन अपरिहार्य अछि
आ ई युग मँहगी केर नहि
बुजुर्गक दायित्वक अछि।
पराश्रित व्यवस्थाकेर
हम कुण्ठाग्रस्त कापुरुष साहित्यकार
प्रत्येक ठुट्ठाकृति उपलब्धि कें
दर्पस्फूर्त्त भ' कए देखैत छी
कियैक तँ
सदैव मूल्यक अन्वेषण मे रहैवाला
पुरनका पीढ़ीकें
आजुक मूल्यक न्यूनाकार
अपन गरिमा-उद्घोषणक लेल
प्रेरित करैत छनि
आ हमरा सामने
फेनिल उच्छवास-आक्रोशक
स्तूप ठाढ़ भ' जाइत अछि
मुदा पुरनका पीढ़ीक
ध्वस्तप्राय व्यक्तित्व
आ
विघटित मूल्यक
परिचय धरि सभकें भेटि जाइत छनि।

●●

विशिष्ट

●

हम भीड़ मे हेरा गेल छी
हमर कथ्य-अकथ्य क्यो नहि सुनि पबैत अछि।
बुझना जाइछ,
आत्म-उद्घोषणाकेर युग
व्यतीत भ' चुकल अछि
आ' जीवाक लेल
मात्र स्रोता बनि जिउनाइ आवश्यक।

विशिष्ट कहयबाक
अपन महत्त्वाकांक्षाकेर दाह-संस्कार करब उचित
कियैक तँ
भीड़, भीड़ थिकै
ओकरा लेल
विशिष्ट आ अदना मे कोनो अन्तर नहि।
ओतय तँ केवल चीत्कार
अनेकानेक कण्ठ-स्वर
रुदन-हास्य समाहार।
ओतय स्वरक विशिष्टता
कोलाहलक समुद्र मे विलीन भ' जाइत छैक
प्रलयकेर बादक शान्ति जकाँ
प्रत्येक हेरायल चीन्हि लेल जाइत अछि।

●●

अकाल

●

सड़क पर हड्डी चिबबैत
छौंड़ा सभ
कुकूर आ पुलिसकें
डण्डा देखा रहल अछि
ऐंठल अंतड़ी वाली जनता
भूख-हड़तालक धमकी द' रहलि अछि।
आ
बाँझ सरकार
विदेशक आश्वासन सँ
विवाह रचा रहलि अछि
'लूप' लागल धरती
तथा निवीर्य्य अकाशक बीचमे
देशक नपुंसकता जोर सँ दहाड़िमारि रहलि अछि।
आ' समय एहि सभ सँ असम्पृक्त
नशामे मातल
मैदानमे जा कए सूति रहल अछि।

●●

काॅफी हाउस

●

समस्त काॅफी हाउस
धुआँ सँ भरि गेल अछि
सिगरेट आ' कश
सभतरि छिड़िआयल अछि
सलायक काठी
फसिल उपजाबइत अछि फर्श !
हम काॅफी हाउस मे बैसो वाला
निकम्मा-निठल्ला
बेकार नहि छी
काॅफीमे मिला कए
हो-हल्ला पिबैत छी
कोलाहल कें जिबैत छी
जिनगी केर अभाव-अभियोग
अथवा धक्कम-धुक्कीकें
सिगरेटक राख जकाँ झाड़ि दैत छी ।
धूम्रावर्त्त
हँसी-ठ्ठा,
आ
बदहवास जीवन केर
एहि सँ नम्हर अखहरा,
दोसर नहि

समस्त आक्रोश-संत्रास
एश-ट्रे मे आबि कए नुका गेल अछि

प्राॅफिट-लास सँ उत्पन्न
बदहवासी केर शिकार नहि हम
गन्दगी, आवारगी, बेहूदगी सँ
खेलाइत प्रत्येक क्षण ।

●●

आऽकथू !

●

छन्द, लय, तुक, शब्द, अर्थ
कलामान
सभकें नोंचि-नोंचि खा रहल अछि
समय केर गिद्ध
सम्बोधनक पाछाँ दौड़ि रहल अछि—
श्मशान घाटक कुकुर।
सौन्दर्य संस्कृति
धर्म-दर्शन-आदर्श
मान-मूल्य
विद्रोहक एसिड सँ
भ' गेल भस्म।
चाकलेट जकाँ कविता कें चूसयबला पाठक केर
मुँह मे भरि गेल अछि
यथार्थक तिक्तता
आऽकथू:
आऽकथू:
आऽ-आऽऽ आकथू:
सभ किछु थिक
ढोंग, फूसि पाखण्ड
कविता नहि थिक
चाकलेट
अथवा विवृत जघना कामिनी
कोशीकातक मलेरिया

थ्रोम्बोसिस, कैंसरक
इलाज नहि थिक ई सभ।
संक्रमित युग,
कुनैन, इन्जेक्शन
टेवेलप्ट सर्जरी,
आ
अकाविता केर
क' लेलक अनुसंधान।

●●

केहन अहाँकें लागत ?

●

राति-राति भरि जागल रहि कए
काँपी, कागद या किताब पर
अहाँक चित्र हम रोज बनाबी
—सावा हाथक घोघ
—माथ भक-भक सिनूर सँ
बाला वा बड़हरी याकि ठेलाक
मध्य मे भरल ठसाठस चूड़ी
आ उँचगर साड़ी मे
भरि बँहियाँ आँगी पहिरा कए
देहाती महिला जकाँ
चित्रित क' दी तँ—
केहन अहाँकें लागत ?
शहरी जीवनकेर संस्कृति, रूचिबोध
न तँ कुण्ठित भ' जाइत ?
काॅलेजक शिक्षा, क्लबकेर सभ्यता
न तँ आहत भ' जाइत ?

●●

वरदान आ अभिशाप

●

भरि दिनकेर थाकल ठेहियाअल शरीर हो
ऑफिसक व्यस्तता,
ट्राम-बसक घक्कम-धुक्की सँ
विषतिक्त बनल हो मोन
तखन हे हमर आजानुकेशी प्रियसंगिनी !
सभसँ नीक लगैत अछि
अहाँक हाथक गरम-गरम चाह ।
ई बात दोसर थिक जे
चाह समाप्त होइतहि
अहाँक दोसर हाथ सँ झोला ल' कए
जाय पड़त बाजार ।
जे हमरा जीवनक थिक
सभ सँ पैघ अभिशाप ।

●●

शाद्वलक अनुराग

●

चैत मासक सुरा-तंद्रिल प्रात
वायुकेर ठुनकी कँपइत तरुपात
सुरभि-सिंचित ज्योत्स्ना अवदात।
पल्लवित सभ डारि
मंजरल आम
हरित-वसना धरित्री टिसुआ रहलि
उभरैत यौवन देखि ज्यों सुकुमारि।
फुलायल सिम्मर पलास कनैल,
फुलायल कचनार
भेल पुष्पित बन्द कोंढ़िक ढेर
सभतरि किसलयक साम्राज्य
पनगी-स्पर्श कए
पुलकित-सुस्निग्ध बसात।
मुदा एखनो
ठुट्ठ जीवन, ठुट्ठ जन-विश्वास
ठुट्ठ आत्म-विकास
ठुट्ठ आस्था-वृक्षकेर सभ डारि
ठुट्ठ, संगे बिना मूँठिक
बुद्धिकेर तरुआरि
योजना-पथ सँ प्रगति अभियान
सेहो ठुट्ठ
छद्मवेशी मानवक सम्मान
सेहो ठुट्ठ

क्षुब्ध आत्मा
भ्रमित प्रज्ञाकेर सभ सन्धान
सेहो ठुट्ठ।
आइ जीवन मे कतय अछि
सृष्टिकेर सुविकास ?
सुरभित प्रसूनक मुक्त हास-विलास,
मधुॠतुक ओ दिव्य चन्दन-कान्ति ?
सरित-तटकेर प्रेरणा-प्रद शान्ति ?
घृणा, कुत्सा, क्षोभ, ईर्ष्या, डाह
आत्मदाहक यंत्र-चालित बुद्धिकेर-प्रदाह।
बाँझ धरतीकेर जागल भाग,
मुदा कहिया स्फूर्त्त होइत
अन्तरक मरुभूमि मे
नव शाद्वलक अनुराग ?

●●

आइयो भरि राति

•

आइयो भरि राति सिहकल पुरबइया
खुलि गेल ओठङायल खिड़कीक पल्ला
पलखति पबैत खसि पड़ल
—दू-चारि टा बुन्न
भीज' लागल आँखिक कोर
उड़' लागल स्मृतिकेर पन्ना।

आइको उधिआयत कारी-कारी मेघ संग
उड़ि गेल हमर निन्न
बिजुरी सन बुझना गेल दन्त-पंक्ति
विदग्ध भेल हृदय देखि सुषमाकेर सागर।

आइयो मोन पड़लाह कालिदास
मोन पड़ल रामगिरि आ अलका।
—धीर प्रशान्त अनुकूल नायक यक्ष
—स्वीया विरहीक आकुल यक्षिणी।

बुझना गेल जड़-चेतन-विवेक-शून्य कामान्धता
बुझना गेल मेघदूतक रहस्य ?

••

समर्पण

•

सूखल टटायल जिनगी
गेंहायल विश्वास
संक्रान्तिक देवता कें समर्पित संत्रास।

••

कवि कोकिल कें युग-निमन्त्रण

●

बोसम शताब्दीक यन्त्र-युग मे हमर जन्म भेल अछि
माथा धुँआयल अछि वैज्ञानिक अनुसंधान सँ
हृदय पर राखल अछि अर्थक्रान्तिक असह्य पाथर
बमक विस्फोट, प्रक्षेप्यास्त्रक अन्तरिक्ष व्यापी प्रभावसँ
भयाक्रान्त अछि जीवनक प्रत्येक श्वास
यन्त्रोद्भूत हमर जीवनक रहस्य
नहि होयत अहाँकें ज्ञात
हे कवि शिरोमणि !
अहाँ तँ देखैत रहलहुँ
अज्ञात यौवनक अपरुप रूप
सद्यः स्नाताक फूजल चिकुर-राशि
सगुनायल सिउँथ
बेली-कनैल सँ सजाओल वेणी
अहाँ की बुझबै लिपस्टिक-रंजित
ठोरक की शोभा होइत छैक ?
अहाँ की बुझबै बिना चूड़ीक हाथक रहस्य ?

अहाँ तँ रही निपट अनाड़ी
नन्दक नन्दन कें कदम्ब तरु तरे
अहाँ देखैत रहलियनि,
मुदा बस-स्टेण्ड पर प्रतीक्षाकुल
मजनूक सहोदर दिस नहि गेल ध्यान
'बाँल-डान्स'क मिसियो भरि नहि रहय ज्ञान !

प्रेमी-युग्मकेर अहाँ देखैत रहलहुँ निधुवन किलोल
आह ! देखि जँ सकितहुं
आजुक प्रयोगशाला मे
कोना होइत छैक
अंकुरित यौवनाक प्रत्येक भंगिमा पर अनुसन्धान !

गंगाकेर महिमा गाबि अहाँ कयलहुँ
मिथिला कें पाप-मुक्त
मुदा आब तँ गंगा छथि शीशी मे बन्द
बिलाय गेला बमभोला
धर्म-निरपेक्षताक भाप मे ।
आइ जुनि सुनाउ महेशवाणीक मर्म ।
यदि हमर निमन्त्रण होअय स्वीकार
तँ चलि आयब चौरंगीक पार
कोनो 'बाँब्ड-केशी' अर्द्धनग्नाक
सुगठित बाँहि पकड़ने
हमहूं भेंटब कोनो संकेत-स्थल पर ठाढ़ ।
●●

माटि आ मोज़ाइक

●

जखन तखन अहाँ हमरा लग आबि कए
आँखि नींचा कए
भ' जाइत छी ठाढ़ि
आ' पयरक आंगुरि सँ
नोच' लगैत छी फर्श
कतेक लाल भ' जाइत अछि
अहाँकेर नोह
कुछ तँ बुझियौ
ई गामक नरम-कोमल माटि नहि
मोजाइक अछि
तरबाकेर नीचा मे।

●

अभिवादन

●

आइयो आँजुरि नहि खुजि सकल
आ तरहथ्थीकेर बीच मे
समर्पणकेर फूल पिसा कए रहि गेल।

आइयो अर्द्ध निमीलिते रहल नेत्र
आ आँखिक कोर मे
अभिवादनकेर चित्र नोर बनल रहि गेल।

आइयो अकम्पित रहल ठोर
प्रश्नातीत मुद्रा
निश्चल अंग-प्रत्यंग।

कतेक भरिगर रहै ओ सावन
जे अपन सम्पूर्ण आवेग कें समेटने
बिनु बरसले चलि गेल।

●●

हमर विकलांग देश !

●

रातुक सन्नाटा
ठहाठही इजोरिया
प्रबल वेग स्पन्दित शीत लहरी

आ
ई सुलम्ब फुटपाथ पर
कूड़ा घरक दूनूकात
सूतल हजार-हजार नर-नारी
सैकड़ो कुकूर
एहि बातक साक्षी जे
हमर एकटा पयर
एक विकलांगक डाँड़ मे धँसि गेल अछि
दोसर पयर सँ त्रिभुवन नापबाक लेल
उद्यत छलहुँ
कि गन्दगी आ फलक छिलकोइया सँ भरल ड्रेन
ओकरो उदरस्थ कए
हमर सम्पूर्ण गति कें
अवरूद्ध क' देने अछि ।
हम ठेला पर बैसि कए
तौनी पर सूतल
एक पलिया ओढने
भारत भाग्य विधाताक चारुकात

परिक्रमा क' रहल छी
जे दिनुका ठेही कें
ठर्रा पी कए
माघक एहि राति मे कम क' रहल अछि ।

हमरा बुझना जाइछ
अभावक सन्नाटा
कर्जक इजोरिया
आ सूदक शीत लहरी
हमर दयनीय विकलांग भूखल देश कें
माघक राति जकाँ घेरने अछि
आ हमर देश
निष्क्रिय बनल
तौनी पर एक पलिया ओढने
ठर्रा पी कए सूतल अछि ।

हमरा देशक चिन्तन
हमरे जकाँ
ठुट्ठ आ अपाहिज भ' गेल अछि ।

आश्वासनक ठेला पर
चिन्तनक पर्यवेक्षक दृष्टि
मात्र परिक्रमा क' रहल अछि
जाड़ मे ठिठुरैत
भारत भाग्य विधाताक ।

●●

ग्रीष्मक बसात

●

प्रबल वेग धावित ग्रीष्मक बसात
पैंनाक चोट खा कए
जेना कोनो कुकूर
दौड़य अपस्याँत।
घरफोड़नी कुटनीक
दुष्टतासन एकर गति
आधे रस्ता सँ घुरि आयत
मारल गेलै मति।

●●

विदेह

●

हम सदेह छी आत्मा सँ
तन सँ विदेह छी
मुदा न कखनो हम अनंग
अथवा विवस्त्र छी
सरिपहुं,
आत्माकेर सदेहता
आभ्यंतर सज्जा कें बहुतो बढ़ा दैत छै
बाह्य रूप-विन्यास आदि कें
अपन तेज सँ बिला दैत छै।

आत्मा स्वयं शरीर वरण कए
प्रकट भेल अछि
लज्जावश ई देह (अनात्म) विदेह भेल अछि।

●●

दिनचर्या

●

बेड टी
दैत अछि प्रभातक सूचना ।

फैक्टरी, ऑफिस, सचिवालय
अथवा
स्कूल-कॉलेजक
विडम्बनामय संघर्ष
अथवा संघर्षमय विडम्बना
थिक कर्मसंकुल दिनक प्रतीक।

बीड़ी-सिगरेट-पान-चाह
आत्मदोहनक दुपहरियाकेर
उत्ताप कें करैत अछि कम
बस-ट्राम-टैक्सी-लोकल ट्रेनक
धक्कम-धुक्की मे
हेरा जाइत अछि साँझ।
पत्नीक थाकल-ठेहियाअल-स्याह आकृति
किंवा धिया-पुताक अभाव कातर आँखि मे
डूबल राति।
विश्रान्तिक काँट कें करैत अछि तीक्ष्णता प्रदान ।
एहि क्षयोन्मुख जीवन मे
स्वप्नक नहि अछि कोनो स्थान ।

●●

हम हारि नहि मानब

●

मिल-फैक्टरी-चटकलक एक नम्बरक पुर्जा सँ
बहरायल दू नमम्बरक टाका सँ
ठाढ़ तँ क' देलौं पाँच गोट दस महला मकान,
मुदा आयकर विभागकेर
प्राण लेबा दैत्य सँ कोना बाँचत प्राण ?
परुकें तँ हे तीर्थंकर तीर्थंकर महावीर !
कयने छलौं चातुर्मास मे सवा लाखक दान !

'लाइसेन्स', 'परमिट', 'टैक्स रिबेटक'
सभ आश्वासन
सेक्रेटरी, अण्डर सेक्रेटरी आ किरानी बाबूक
टेबुल पर
'पेपरवेट'-जकाँ
पड़ल अछि निश्चल-निस्पन्द ।
एहि युग मे कतेक होइत अछि अनर्थ
भगवान पारसनाथ
आ वित्तमंत्रीक पाछाँ खर्च कैल
सभ रुपैया गेल व्यर्थ ।

व्यवसाय मे
दोस्त आ दुश्मन
देशी आ विदेशी
कारी आ सफेदक

पार्थक्य जोहनिहार जनता आ सरकार
कियैक नहि करैत अछि
हमर 'बैलेंस सीट'क घाटाकेर पूर्त्ति ?

मुदा नहि
हम हारि नहि मानब
रिटैंचमेन्ट, ले ऑफ, क्लोजरक यंत्र अछि
हमरे हाथ मे
चेष्टा कए आप्राण
बचायब अपन औद्योगिक प्रतिष्ठान ।

होमय देबै हड़ताल-घेराव
आ धयने रहब देशक टीक
अपना हाथ मे
देखैत छी
भूखल कर्मचारी
आ निरुपाय सरकार
कहिया धरि नहि होइय अछि
परास्त ।
●●

अनावृत रहस्य

●

काल-खण्डक छोट-छोट टुकड़ी बनि
हम छिड़िया गेल छी ।
ओकरा फेर बीछि कए
हमर प्रतिमा गढ़ि
हमरा चीन्हबाक प्रयास
निष्फल हैत ।

पिण्ड छलहुँ
किन्तु कण केर महत्ता कें
चीन्हलहुं
आ स्वयं एक अणु बनि
यत्र-तत्र उड़िया गेलहुं
ओ कण पर जे प्रतिछाया अछि
से हमर थिक ।
हमर वर्गीकृत जीवनक
विश्लेषित पल भने
छोट आ महत्त्व हीन अछि
मुदा ओहिपर
युग आ जीवनक
प्रकृति आ परिवेशक
सम्यक् दृष्टि छैक

—कर्जक स्थापना नहि
—अवांछित आग्रहक आसंग नहि
—आरापित तथ्यक विडम्बना नहि
वैंह पल हमर जिनगीक
अनावृत रहस्य अछि।
●●

विगत वर्ष
●
हे हमर पछिला वर्ष-मीत !
.........अहाँ चलि गेलहुं
लादि कए
हमरा माथ पर अपन ऋणक बोझ।

अभिशापित द्वन्द्वकेर
शब्दहीन अर्थ छोड़ि
आँखिक कोर भिजा
वेदनाकेर रजत-व्रण तरहथ्थीपर
हमर अस्तित्वकविभूति कें
पराजयक माथ पर हततेज टीका जकाँ
अनुक्षण कनइ लए
छोड़ि गेलहुं।

असन्तुलित यापनक्रम छल अहाँकें अभीष्ट।
हम अहाँकेर अनुगत (!) शोध करैत छी ऋण !
●●

एहि मे हमर की दोष ?

●

निठट्ठ रौद मे भमारल कारी शरीर
भूख-पिआसक सर्प-दंश सहन नहि कए
जौं बिसरि गेल अछि
अन्न आ लाश मे अन्तर
एहि मे हमर की दोष ?

मोनक अनुशासन भंग कए
हाथ जौं पसरि गेल अछि दूर धरि
पेट एखनो मौने अछि
बाजे लागल अछि टीन
एहि मे हमर की दोष ?
बीच सड़क पर स्वयं नाङ्ट रहि
दान मे पाओल वस्त्र कें लैत अछि बेच
एहि मे हमर आंगुरि पकड़ने
हकन्न कनैत
छोट-छोट बच्चा सभक की दोष ?

चारि मास पहिनेक बूनल खेतमे
बीआ सभ चमकि रहल अछि
आँखिक नोर जकाँ
पयरक बिआइ जकाँ
जौं दरकल लगैत अछि धरती
एहि मे हमर की दोष ?

●●

तर्पणः अट्ठारह वर्षक बाद

●

स्वप्न जकाँ बुझना जाइछ
पुत्र-शोक मे कनइत
रागिणी मायक आँखिक नोर
आ मायक मृत्यु सँ विषण्ण-अनाथ-छटपटाइत
हम चारियो भाइ-बहिन कें
समेटने वृद्ध पितामह केर दुर्बल बाँहि
प्रगाढ़ निद्रा मे देखल स्वप्न जकाँ बुझना जाइछ ।

दुलार-सिनेहक अवस्था मे
सुनल डाँट-फटकार
पाओल तमसायल पिता-पित्तृव्यक झापड़
बबूरक कटही छड़ीकेर मारि ।
छोट-छोट बातक 'कैफियत' लैत रहला
घरक सभ बुजुर्ग व्यक्ति ।

आत्मस्थ भ' गेला भैया घरक परिवर्त्तित रूप देखि कए
अव्यवहारिक, अपटु, घुन्ना शब्द सँ
सम्बोधित होइत रहलाह ओ सभ दिन ।

अल्पायु मे दुर्गा उठा लेलक मायक सभ दायित्व
बुझि गेलि भाइ-बहिनक प्रति अपन कर्त्तव्य
अबोध विमला जन्महि सँ बूझल गेलि

अशुभ लक्षिणी
खा गेलि ओ पितामही आ मायकें
आ हमरा पर सवार भ'गेल
चोरी-आवारगीक भूत।
एहि तरहें हम चारियो भ' गेलियनि
अपन प्रवासी पिताक लेल
क्षोभ-आक्रोशक कारण।
लालायित रहि गेलौं माय
तोहर ममतामय टूटा शब्दक लेल।
टोइत रहि गेलौं माथ
कनइत रहि गेलौं हकन्न
मुदा नहि देलैं आबि कए तों पीठ पर हाथ।

पिताकें छलनि कर्त्तव्य-बोध
पठबैत रहलाह पढ़बाक लेल
अपना कठिन परिश्रम सँ अर्जित
रुपैया
ओ रुपैया ज्ञान तँ देलक
पोछि नहि सकल आँखिक नोर
नुका नहि सकल अपना वक्ष मे
द' नहि सकल तोहर ममता।

शैशव-कैशोर्यक सभ आशा-आकांक्षा
तर्क-सम्मत उत्तर सँ भेल सम्मानित

अनादृत रहि गेल सभ उमंग-उत्साह
दुलरा नहि सकल कियो हमर अपराध कें।

जन्महि सँ विद्रोही हमर स्वभाव.
रहि गेल हठी बालक जकाँ अपना जिद्द पर
अटल,
अभीष्ट नहि भेलै ओकरा कहियो कोनो आवरण।
अप्रिय सत्यक कठोरता सँ करैत रहि गेल
सभकें दग्ध-क्षुब्ध
मधुर सत्य आ झूट मे नहि बुझलक
बेसी अन्तर।
सिनेह ममताक भूखल ओ
यश-सम्मान-पैसा सभकें लतिया कए
सीख लेलक औघड़पन
प्रशंसा मे बुझना गेलैंक चाटुकारिताक गन्ध
अपनत्वक प्रत्येक शब्द लगलैक
प्रवंचनाक जाल।
आइ हम सभ किछु बिसरि गेल छी
बीस वर्ष पहिनेक तोहर
प्रतीक्षाकुल आँखिक शब्दहीन भाषा
छटपटाइत प्राण
कोर गे खेलाइत नेना सभक
छोट-छीन हँसी सँ

मुग्ध तोहर मुख मुद्रा
आइ हम सभ किछु बिसरि गेल छी।

मोन नहि पड़ैत अछि
तोरा हाथक बनाओल
तीमन-तरकारीक स्वाद
तोहर शव-यात्रा सँ घुरलाक बाद
काँट-कुश सँ लिधुरायल पयरक सभ घाव
बिना तोहर परिचर्येक
कोना सुखा गेल
से मोन नहि पड़ैत अछि।
●●

महानगर
●

महानगरक लहराइत जनसमुद्र
तुमुल कोलाहल
हमरा कँने अछि उदरस्थ
आइ हम भ' गेल छी ध्वस्त
टूटल छिड़िआयल जिनगी
एकाकीपन
संस्कारहीनता
संदर्भरहितता
मात्र हमरे नहि
हमरे सन लाखो व्यक्तिक भ' गेल छैक नियति।

बरौनी टाउनशिपक निर्जन सड़क
आ किरतौल-कौआ चड़क आड़िपर
बिनु पनही चलबाकालक सुख,
मधुरापुर-निपनिया दोराक नीरव शान्ति,
राजेन्द्र सेतुपरक निधुवन किलोल
एस्प्लानेडक चक्राकार ट्राम-लाइन
आ श्यामबाजारक फाइव प्वाइन्ट टरमिनस पर आ कें
भुतिया गेल अछि।
सलकिया-शालीमारक लेबर कॉलोनी
खिदिरपुरक खलासी-टोलाक
खाँटी ठर्रा

अथवा मॉलिन रोज, मोकेम्बोक सुगन्धित शराब सँ
जागल उदभ्रान्ति
टालीगंज, फ्रीस्कूल स्ट्रीट, सोनागाछी
जाकें पबैत अछि शान्ति ।

दौड़ैत रहैत अछि मोन
अधपहरा रातिमे
विक्टोरिया, रेडरोड, इडेन गार्डेनक टिमटिम प्रकाश मे
क्रीड़ारत
प्रेमी युग्मक ठोर
आ आंगुरिक पोर
पर ।
उड़ि जाइत अछि सम्पूर्ण चेतना
टैक्सी-प्राइवेट कारमे होइत काम-युद्धक संग ।

एहि तरलायित महानगरमे
कृष्णक विविध रूप-वेशी सोलहो हजार रानी
क्रीड़ा-कौतुकक हेतु उगाहैत छथि एडवान्स !
दलाली मे कृष्ण पबैत छथि
छोट-छीन मुस्की,
कुम्हलायल फूलक गन्ध ।
परिवारक दुर्वह भार सँ झुकि गेल छनि रीढ
गोवर्धनधारी कन्हैयाकेर,
प्रधुम्नक पढ़बाक खर्च जुटबैत छथि
चिर यौवना राधा !

हमर स्मृतिक धरोहरि—अप्पन माटिक गन्ध—
—राइटर्स बिल्डिंगक स्तूपाकार फाइल
—न्यू सेक्रेटेरियटक संगमरमर
—बेलूर मठस्थित स्वामी रामकृष्णक आसन
तथा कालीमायक हाथक सेंदुर मे
जाकें सटि गेल अछि ।
गन्ध—मात्र गन्धे छल हमर ऐश्वर्य
तकरो क' देने छी त्याग
सार्वजनिक उपभोग
आ ऐकान्तिक बलात्कारक लेल ।

हुगली केर तेजस्वल धारकें उत्सर्गित
आइ धरिक अर्जित शुभकामना-आशीर्वाद कें
मालवाहिनी बड़का जहाज
वात्याचक्र बना कए देने अछि छोड़ि
हावड़ा ब्रिजक बिचला सीढ़ी पर सँ
हम कतेक बेरि कैने छी आत्महत्या
मुदा सभ बेरि हमर आत्मा
जा कए लटकि गेल अछि बस मे
थकुचायल-पिसायल हमर अस्थि-अवशेष
चिलमक छाउर लगाकें
निमतल्ला महादेवक करैत अछि गुनगान
मकर संक्रान्तिमे हर-हर बम-बम करैत
पहुँचैत अछि तारकेश्वर

आ अस्थि मे मज्जा बनि चुनचुनाइत रहैत अछि
कोनो सहयात्रिणी नवोढ़ाक रूप ।

रिक्सा-ठेला चलबैत काल
मोटरी-भाका उठबैत काल
जतेक बहैत अछि घाम-पसेना
सभकें हम डलहौजीक कोना पर
पेशावखाना सँ अबैत दुर्गन्धि सँ व्याकुल-छटपटाइत
मिथिलानरेशक प्रतिमा लग विसर्जितक' अबैत छियनि ।
कलकत्ता-स्थित मिथिलावासीक
घटना-दुर्घटना
आत्महत्या-मृत्यु
चोरी-छिनरपन
ठर्रा-शराब
सभक एक मात्र निष्क्रिय, मूक, दयनीय साक्षी
—मिथिलानरेश
अपन ऐश्वर्यक दीपतर समस्त मिथिला कें
अन्हार मे राखि, आइ स्वयं निरीह बनि
भोगि रहल छथि अपन अपराधक दण्ड
आइ हमरे जकाँ ओहो छथि
एक मुट्ठी अन्न आ एक चुरू जलक लेल
कतेक वर्ष सँ भूखल-पिआसल
सुनैत छथि अहर्निश
पचास हजार मैथिलक मर्यादित गाड़ि ।

गिरीश घोषक प्रतिमातर बैसिकए
करैत छी साँझ-भिनसर
मिथिला-मैथिलीक समस्या पर चर्चा (!)
चुनबैत छी खैनी
सोंटैत छी गाँजा
सिद्धावस्था मे पहुंचि दैत छी अव्याहत गाड़ि
मरवड़िया-बंगलिया कें
आ फेर पहुँचि जाइत छी
माँजै लए तसला
बनबै लए भोजन
करै लए दरबानी
उठबैलए भाका
जोगारै लए ट्यूसन
पिजबै लए छूरी
करै लए अदगोइ-बदगोइ
जकरा ओतय करैत छी कतेक वर्ष सँ काज ।
धिआ-पुताक उपनयन-विवाह, पढ़वा-लिखवाक खर्च
कहुना जुटा लैत छी ।
वर्ष मे एक बेरि विद्यापति-जयन्ती मना कए
नाच-रंग कए
अथवा आन्दोलनक सोडा वाटरक जोश देखाए
निश्चिन्त भ' जाइत छी ।

कखनो बड़ा बाजारक पंचमहला पर सँ

हावड़ा ब्रिजक चूड़ान्त दीप कें
टुकुर-टुकुर तकैत
सट्टा बाजारक बदहबासी मे ऊर्ध्वश्वास लैत छी
आ कखनौ
न्यू अलीपुर-बालीगंजक सौरभयुक्त मदालस
परकीया-विलासक भंगिमा कें
वातानुकूलित नाइट-क्लब
अथवा द्रुम-वल्लरीकेर बाँहिमे अलसायल एकान्त बंगलामे
पहुँचाए,
पत्नी नाम धारी परती जमीनक
नाप-जोख बिक्री-बट्टाक प्रबन्ध मे लागल
कोनो वहशीकेर क्रुद्ध-क्षुब्ध-आग्नेय दृष्टि सँ
अपनाकें बचा,
कत्थक नृत्य आ रवीन्द्र-संगीतक झंकृति सँ मुखर
ड्राइंग रूमक सिङ्गार,
बंग-कन्याकेर नूपुर-धुनि सुनैत छी ।
कखनौ मर्यादाक रामनामी ओढि
बनि जाइत छी आदर्श
आ ककरो आस्था-विश्वासक तुलसीचौड़ा पर
रोपि दैत छी एकटा बबूरक गाछ ।

"सोनार बांगला देश" क वक्षमे मणिदीप जकाँ जड़ैत
एहि महानगर कें
कतेक फिरंगी, कतेक चार्नाक,

कतेक क्लाइव, कतेक डुप्ले
लए भागवाक चेष्टा कैने छल ।
दुलरा कए, पुचकारि कए
बूट सँ थकुचि कए
मशीन सँ पीसि कए ।
लन्दन, पेरिस न्यूयार्क धरि
एकरा सैकड़ो बेरि लए जाओल गेल
मुदा सभ बेर एकर जीवित लाश कें
ल' आनलकैं अछि बंगालक खाड़ी
भारतक सीमा पर ।

ई चिर शिशु, चिर तरुण, चिर वृद्ध
महानगर
महारानी विक्टोरियाकेर बाहु-पाश सँ पड़ाय
फूटि पड़ल छल स्रोतस्विनी बनि
रविठाकुर, नजरुल इस्लामक कवितामे
भरने छल ओज निराला आ उग्रकेर रचनामे
नागार्जुनक लेल द्रव्यदोहन-धाम
आ राजकमल लेल वेश्या तथा शराब बनि
ई महानगर कैने अछि मलयराय चौधुरी पर
अश्लीलताक आरोप ।
अपन उत्तान वक्ष पर करौने अछि
हमरा सभ कें कोनो एक स्थितिकेर बोध ।
आ' बना चुकल अछि

अपन विकृति-विद्रूपताकेर आसव पिआ
विसंगतिक उद्‌घाटक ।

एहि सम्पूर्ण महानगर कें पीबि जयबाक लेल
हम अन्धाधुन्ध 'सिप' क' रहल छी
माँतल-औंघायल व्यभिचारी देवताक संग ।
कखनौ पुलिस आ कखनौ ऑफिसक फाइल सँ
अपना कें बचबैत
बार, कॉफी हाउस अथवा कोनो बन्द कमरा मे पहुंचि
अन्तर्यात्रा करै लगैत छी ।

नारा-आन्दोलन-समारोह-जुलूस
हड़ताल-अनशन
भीड़-दुर्घटना
गोष्ठी-सम्मेलन
सभ सँ असम्पृक्त
सभ सँ कटल
एकटा आओर कलकत्ता कें देखैत छी
एहि कलकत्ताक अन्तराल मे
जीवित—प्रवहमान ।

